AKSHANSH PUBLICATION

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) व राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालय सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB) की विभिन्न परीक्षाओं हेतु

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

नवगठित 7 संभागों एवं 41 जिलों पर आधारित

राजस्थान
कला-संस्कृति, परम्परा एवं विरासत

आर.ए.एस. (RAS), प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी एवं तृतीय श्रेणी अध्यापक, सब इंस्पेक्टर (राज. पुलिस), राज. कांस्टेबल, पटवार, ग्राम सेवक, एल. डी. सी., जूनियर एकाउंटेंट, एग्रीकल्चर सुपरवाइजर एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी पुस्तक।

विशेषताएँ:

- मा.शि. बोर्ड की पुस्तकों पर आधारित सटीक एवं प्रमाणित सामग्री।
- राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी एवं सुजस पर आधारित प्रामाणिक जानकारी।
- गत परीक्षाओं (2018 से 2024) के प्रश्नों सहित विस्तृत प्रस्तुतीकरण।
- नई परीक्षाओं के अनुसार अद्यतन (Updated) सामग्री।
- महत्वपूर्ण टॉपिक्स पर सारगर्भित सारणियाँ एवं चार्ट्स।

लेखक
डॉ. मनीष श्रीमाली सर (सहायक आचार्य)
करण सर (लक्ष्य सीनियर टीचर)
सुरेश गहलोत (कनिष्ठ लेखाकार)

MRP :₹200

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™
M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

श्री आनंद अग्रवाल
निदेशक
लक्ष्य क्लासेज, उदयपुर

दो शब्द...

प्रिय विद्यार्थियों.........

आपके समक्ष राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) और राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालय चयन बोर्ड (RSMSSB) द्वारा आयोजित राजस्थान की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु राजस्थान की कला एवं संस्कृति विषय के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की स्टडी गाइड पुस्तक प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पुस्तक विद्यार्थियों की विभिन्न परीक्षाओं की तैयारी को मजबूत बनाने और परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से लिखी गई है। यह स्टडी गाइड पुस्तक राजस्थान की सभी परीक्षाओं में राजस्थान की कला एवं संस्कृति की आवश्यकताओं के गहन अध्ययन को दृष्टिगत रखते हुए सम्पूर्ण नवीनतम परीक्षा पैटर्न पर तैयार की गई है।

यह पुस्तक सम्पूर्ण नवीनतम पाठयक्रम और नवीनतम 7 संभाग एवं 41 जिलों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जिसके तहत राजस्थान की कला एवं संस्कृति विषय की सम्पूर्ण पाठ्यसामग्री दी गई है। इस पुस्तक में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पुस्तकों पर आधारित सटीक एवं प्रामाणिक सामग्री तथा राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी एवं सुजस पर आधारित प्रामाणिक जानकारी के साथ, तथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित पाठ्यसामग्री दी गई है। इसके अतिरिक्त, इस पुस्तक में सभी अध्यायों के टॉपिक्स अनुसार विगत वर्ष परीक्षाओं के वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का भी समावेश किया गया है।
इस पुस्तक को विषय विशेषज्ञों ने अपने विशिष्ट अनुभव व कौशल से तैयार किया हैं। यह पुस्तक राजस्थान की परीक्षाओं के प्रतिभागियों की आगामी परीक्षा की तैयारी को मजबूत बनाने और सफलता प्राप्त करने के उद्देश्य से लिखी गई है, जिससे वे अपनी तैयारी के लिए एक बेहतर रणनीति तैयार कर सकते हैं।

मार्गदर्शन- लक्ष्य क्लासेज के विषय विशेषज्ञ शिक्षक मनीष श्रीमाली सर और करण सर के निर्देशन में।
पाठ्यसामग्री निर्माता- सुरेश गहलोत, राजवर्धन बेगड़ और गंगासिंह भाटी।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक राजस्थान की विभिन्न परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए अत्यंत लाभप्रद है।

लक्ष्य परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

आनंद अग्रवाल
निदेशक, लक्ष्य क्लासेज

लक्ष्य क्लासेस ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को लक्ष्य क्लासेस की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय	पेज संख्या
1.	राजस्थान के प्रमुख दुर्ग	1 - 21
2.	महल एवं स्मारक	22 - 29
3.	हवेलियाँ, छतरियाँ एवं बावड़ियाँ	30 - 41
4.	मंदिर, मस्जिद, दरगाह एवं मकबरें	42 - 53
5.	लोक देवता एवं लोक देवियाँ	54 - 66
6.	लोक संत एवं सम्प्रदाय	67 - 77
7.	मेले एवं त्योहार	78 - 89
8.	राजस्थान की चित्रकला	90 - 98
9.	लोककला एवं हस्तकला	99 - 112
10.	लोक नृत्य एवं नाट्य	113 - 124
11.	लोक गीत एवं संगीत	125 - 131
12.	लोक वाद्य यंत्र	132 - 140
13.	आभूषण, वेशभूषा एवं खानपान	141 - 153
14.	राजस्थान की भाषा, साहित्य एवं बोलियाँ	154 - 170
15.	राजस्थान के रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	171 - 179
16.	राजस्थान की शोध संस्थाएँ एवं संग्रहालय	180 - 188

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग

- राजस्थान में दुर्गों के स्थापना का विकास का प्रथम आधार कालीबंगा की खुदाई में मिलता है।
- राजस्थान में महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के पश्चात् सर्वाधिक दुर्गों का निर्माण हुआ है।
- दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनु स्मृति में मिला इन्होंने छः श्रेणियाँ बताई।

कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की 4 श्रेणियाँ है-

- 1. औदुक दुर्ग 2. पर्वत दुर्ग
  3. धान्वन दुर्ग 4. वन दुर्ग
- कौटिल्य व मनु के अनुसार गिरि दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।
- **शुक्र नीति** - राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग **'हाथ'** की संज्ञा दी गई है।
- शुक्र नीति के अनुसार **सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ** श्रेणी का **दुर्ग** है।

शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग 9 श्रेणियों के होते हैं-

1. **गिरी दुर्ग** – पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में निर्मित है।
   उदाहरण - मेहरानगढ़(जोधपुर), तारागढ़(अजमेर)।
2. **एरण दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जहाँ तक पहुँचने का मार्ग कठिन और दुर्गम हो।
   उदाहरण - चित्तौडगढ़ और जालौर दुर्ग।
3. **वन दुर्ग –** घने जंगलों में निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - सिवाना का दुर्ग।
4. **धान्वन दुर्ग –** जो चारों तरफ से रेतीले मैदान से गिरा हुआ हो।
   उदाहरण - जैसलमेर का दुर्ग।
5. **जल दुर्ग –** नदियों के संगम स्थल पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - गागरोण दुर्ग।
6. **पारिख दुर्ग –** चारों तरफ गहरी खाई युक्त दुर्ग।
   उदाहरण- भरतपुर दुर्ग, जूनागढ़ दुर्ग।
7. **पारिध दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसके चारों तरफ परकोटा हो।
   उदाहरण- चित्तौडगढ़, जैसलमेर दुर्ग।
8. **सैन्य दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसमें सैनिक निवास करते हो।
9. **सहाय दुर्ग –** जहाँ सैनिक व आमजन दोनों निवास करते हो।

- **चित्तौड़ दुर्ग** धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग है।

राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल -

- 1. आमेर दुर्ग 2. गागरोण दुर्ग
  3. कुम्भलगढ़ दुर्ग 4. जैसलमेर दुर्ग
  5. रणथम्भौर दुर्ग 6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग
- ये दुर्ग **जून, 2013** में नोमपेन्ह (कम्बोडिया) में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्को साइट की सूची में शामिल किए गये।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग-

- राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- मिट्टी से निर्मित दुर्ग –
  1. लोहागढ़ दुर्ग 2. भटनेर दुर्ग
- राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग –
  1. मोहनगढ़ (जैसलमेर) 2. लोहागढ़ (भरतपुर)
- सर्वाधिक आक्रमण झेलने वाला दुर्ग – तारागढ़ (अजमेर)
- सर्वाधिक विदेशी आक्रमण वाला दुर्ग – भटनेर दुर्ग
- सर्वाधिक गहराई में स्थित दुर्ग – लोहागढ़
- सर्वाधिक बुर्जों वाला किला – सोनारगढ़

सोनारगढ़/जैसलमेर का किला

- जैसलमेर के सोनारगढ़ के नाम से प्रसिद्ध दुर्ग की नींव **जैसल भाटी** ने 1155 ई. में रखी।
- इस दुर्ग का निर्माण शालिवाहन द्वितीय ने पूर्ण करवाया।
- **उपनाम - सोनारगढ़,** गौहरारगढ़, त्रिकूटगढ़ एवं 'उत्तर भड़ किवाड़'**, जैसाणगढ**, **स्वर्णगिरी**, **गलियों का दुर्ग।**
- **प्रकार -** धान्वन श्रेणी का दुर्ग।
- यह त्रिकुट पहाड़ी पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित है।
- पीले पत्थरों से निर्मित यह किला **राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है**।
- सोनारगढ़ दुर्ग का निर्माण **चूने का प्रयोग किए बिना पत्थरों को जोड़कर** किया गया है।
- जैसलमेर दुर्ग विश्व का एकमात्र दुर्ग है जिसकी **छत लकड़ी की** बनी हुई है।
- सोनारगढ़ किले का **प्रवेश द्वार अक्षयपोल** कहलाता है।
- सोनारगढ़ किले के पास ही **गढ़ीसर/घडसीसर झील** स्थित है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

(1) 99 बुर्ज- यह दुर्ग **सर्वाधिक बुर्जों वाला (99 बुर्जे)** किला है।

(2) **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर-** इस दुर्ग का प्रमुख मंदिर **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर** है, जिसमें जैसलमेर शासकों के आराध्य देव की मूर्ति मेड़ता से लाई गई।
(3) इस दुर्ग का प्राचीन मंदिर **आदिनाथ जी (जैन मंदिर)** का है।
(4) जैसलु कुआँ
(5) कमरकोट (घाघरानुमा परकोटा)
(6) **जिनभद्र सूरी भंडार -** यहाँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ रखे हुए है।
(7) **शीश महल -** दुर्ग में महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित सर्वोत्तम विलास।

ढाई साके-

- जैसलमेर दुर्ग ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- **प्रथम साका -** जैसलमेर का प्रथम साका भाटी शासक **मूलराज द्वितीय और अलाउद्दीन खिलजी** के मध्य 1312 ई. में हुआ, इसमें मूलराज द्वितीय के नेतृत्व में केसरिया हुआ।
- **दूसरा साका -** जैसलमेर का दूसरा साका **रावल दूदा और दिल्ली के फिरोजशाह तुगलक** के मध्य 1370-71 ई. में हुआ।
- **तीसरा अर्द्ध साका** - 1550 ई. में जैसलमेर शासक राव **लूणकरण और कंधार शासक अमीर अली** के मध्य हुआ। इसमें वीरों ने केसरिया तो किया लेकिन जौहर नहीं हुआ, इसलिए इसे अर्द्ध साका कहा।
- **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि "**घोड़ा कीजे काठ का पग किजे पाषाण शरीर राखे बखतरबंद ते पहुँचे जैसाण।**"

नोट-

- राजस्थान इतिहास का यह **एकमात्र अर्द्ध साका** हुआ।
- राजस्थान के इस दुर्ग को **यूनेस्को** ने वर्ष 2013 में **विश्व विरासत** में शामिल किया।
- फिल्म निर्देशक **सत्यजीत रे** द्वारा इस दुर्ग पर '**सोनार किला फिल्म**' का निर्माण किया गया।
- दूर से देखने पर यह दुर्ग पहाड़ी पर "**लंगर डाले एक जहाज का आभास**" कराता है।

भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

- इस दुर्ग का निर्माण तीसरी सदी के अन्त **(298 ई.)** में **भूपत भाटी** द्वारा **सरस्वती या घग्घर नदी** के तट पर करवाया गया था।
- इस दुर्ग का अन्य नाम **'उत्तरी सीमा का प्रहरी'** है।
- **वास्तुकार -** कैकेया।
- **श्रेणी -** धान्वन दुर्ग।
- इस दुर्ग में **52** विशाल बुर्ज हैं।
- किले का निर्माण पक्की हुई ईटों और चूने से हुआ था।
- भटनेर दुर्ग राजस्थान का **सबसे प्राचीन दुर्ग** है।
- भटनेर दुर्ग पर **सबसे अधिक विदेशी आक्रमण** हुए।
- 1003 ई. में **महमूद गजनवी** का प्रथम विदेशी आक्रमण हुआ तथा अंतिम विदेशी आक्रमण 1532-34 ई. का **कामरान** का हुआ।
- यह दुर्ग राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है जहाँ पर **मुस्लिम महिलाओं ने जौहर** किया। यह जौहर 1398 ई. में हुआ था। उस समय भटनेर का शासक **दूलचंद** था और आक्रमण **तैमूर लंग** का हुआ।
- इस जौहर का प्रमाण तैमूर लंग की आत्मकथा **'तुजुक ए तैमुरी'** में मिलता है।
- **1805 ई.** में बीकानेर शासक **सूरतसिंह** ने भटनेर शासक **जावतासिंह भट्टी** को मंगलवार के दिन पराजित कर इसका नामकरण **हनुमानगढ़** किया।
  इस दुर्ग में बलबन के किलेदार '**शेर खाँ की कब्र**' है।
- भटनेर दुर्ग में एक प्रवेशद्वार पर एक राजा के साथ **6** नारियों की आकृतियाँ बनी हैं।

जूनागढ़ (बीकानेर)

- **निर्माण -** 1589-94 ई. में **रायसिंह** के द्वारा करवाया गया।
- यह किला राती घाटी में **'बीका की टेकरी'** के ऊपर निर्मित दुर्ग है।
- जूनागढ़ का दुर्ग **'धान्वन दुर्ग'** की श्रेणी में आता है।

उपनाम-

(1) जमीन का जेवर
(2) **लालगढ़-** लाल पत्थरों से निर्मित होने के कारण '**लालगढ़**' भी कहा जाता है।
(3) रातीघाटी का किला।

- यह दुर्ग **सूरसागर झील के किनारे** स्थित है।
- **दुर्ग की आकृति -** चतुष्कोण या चतुर्भुजाकृति।

प्रवेश द्वार -:

- **बाहरी -** कर्णपोल एवं चाँदपोल।
- **भीतरी -** दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल एवं ध्रुवपोल।

सुनहरी कोठी (टोंक)

- **निर्माण -** सन् 1824 में **नवाब अमीर खाँ** द्वारा प्रारम्भ किया गया तथा 1824 ई. में **नवाब वजी-उद्-दौला** द्वारा पूर्ण करवाया गया।
- रत्न, काँच व सोने की झाल देकर बनायी गई इस कोठी का पूर्व नाम **जरनिगार** था।
- इस कोठी की **दूसरी मंजिल** का निर्माण **नवाब इब्राहिम अली** ने 1870 ई. में करवाया था, जो संगीत के शौकीन थे तथा नृत्य व शायरी में भी उनकी रुचि थी।
- सुनहरी कोठी में स्वर्ण की नक्काशी व चित्रकारी का कार्य नवाब इब्राहिम अली ने करवाया गया था।
- **नवाब इब्राहिम अली** ही सुनहरी कोठी के **वास्तविक निर्माता** माने जाते हैं।
- सुनहरी कोठी **शीश महल** के नाम से अधिक लोकप्रिय है।
- इस कोठी की स्थापत्य कला **मुग़ल शैली** का उत्कृष्ट उदाहरण है।

मुबारक महल

- **स्थान –** जयपुर में चंद्रमहल में स्थित है।
- **निर्माण –** सवाई माधोसिंह द्वितीय ने
- **निर्देशनकर्ता -** सर स्वींटन जैकब।
- **वीरेन्द्र पोल -** मुबारक महल के पूर्व का विशाल दरवाजा।
- यह महल **3 शैलियों में निर्मित** है – हिंदू शैली, फारसी शैली, यूनानी शैली।
- इसका निर्माण अतिथियों को ठहराने के लिए किया गया था।

राजमहल

- **देवली, टोंक** के निकट स्थित महल।
- यह महल **बनास, खारी एवं डाई** के त्रिवेणी संगम पर स्थित है।

खेतड़ी महल (झुंझुनूँ)

- **निर्माण-** भोपालसिंह ने 1760 ई. में करवाया।
- महाराजा ने इस महल का निर्माण अपने **ग्रीष्मकालीन विश्राम** हेतु करवाया गया था।
- इसे **'राजस्थान का दूसरा हवामहल'** तथा **'शेखावाटी का हवामहल'** कहा जाता है।
- इस बहुमंजिले महल में **लखनऊ जैसी भूल-भूलैया** एवं **जयपुर के हवामहल की झलक** देखने को मिलती है।

सिलीसेढ़ महल (अलवर)

- इस महल का निर्माण **महाराजा विनयसिंह** द्वारा अपनी **रानी शीला** के लिए 1844 ई. में सिलीसेढ़ झील के किनारे करवाया गया।
- 6 मंजिला इस सुन्दर महल को राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) ने **होटल का रूप** दे दिया है।
- ध्यातव्य है कि सिलीसेढ़ झील को **'राजस्थान का नन्द कानन'** कहा जाता है।

सिटी पैलेस (अलवर)

- **निर्माण**- अलवर राजा बख्तावरसिंह द्वारा **1793** ई. में।
- इस पैलेस के एक ओर **मूसी महारानी की छतरी** है तथा उसके पास ही **सागर झील** है।
- इस महल के निर्माण में **मुगल व राजपूत स्थापत्य शैली** का मिश्रण देखने को मिलता हैं।
- इस महल का **चतुष्कोणीय प्रांगण** बहुत ही भव्य है।
- इस महल में **मुहम्मद गौरी**, **अकबर**, **जहाँगीर और औरंगजेब की तलवारें** मुख्य आकर्षण है।
- इस महल में एक ऐसी म्यान है जिसमें दो तलवारें रखी जा सकती हैं।

विजय मंदिर पैलेस (अलवर)

- **निर्माण-** वर्ष 1918 में अलवर **महाराजा जयसिंह** द्वारा विजयसागर झील के तट पर निर्मित।
- इस महल में **सीताराम का भव्य मंदिर** है।
- झील के निकट बने इस मनोहारी भवन की दीवारें धार्मिक एवं पौराणिक संदर्भों पर आधारित भित्ति-चित्रों से अलंकृत हैं।

रेशमा महल

- रेशमा महल सीकर राजस्थान के **शेखावाटी क्षेत्र** में स्थित है।
- यह एक ऐतिहासिक महल है जो **महाराजा बक्तावर सिंह** द्वारा बनवाया गया था।
- महल का नाम उस स्थान से प्राप्त हुआ है जहां से यूरोप से आया रेशम रूपी सूती ढेर से सूती कपड़े बनाए जाते थे।

ईटराणा की कोटी (अलवर)

- **निर्माता -** महाराजा जयसिंह।
- यह उत्कृष्ट जाली-झरोखों व तोरणनुमा टोडे से युक्त मनोहारी महल है।

सरिस्का पैलेस

- यह महल अलवर-जयपुर सड़क मार्ग पर अलवर से 35 किमी. दूर स्थित है।
- **निर्माता -** अलवर के महाराजा जयसिंह द्वारा।
- जयसिंह ने इसका निर्माण **ड्यूक ऑफ एडिनबर्ग** की शिकार यात्रा के उपलक्ष्य में करवाया था।
- अब इसे **'होटल-सरिस्का पैलेस'** में परिवर्तित किया गया।

मोती की डूँगरी (अलवर)

- अलवर में स्थित यह 1882 ई. में निर्मित है।
- यह महल वर्ष 1928 तक **अलवर शासकों** का शाही निवास स्थान रहा।
- वर्ष 1928 में **महाराजा जयसिंह** द्वारा इसका जीर्णोद्धार करवाया गया।

हवामहल (जयपुर)

- जयपुर में **5 मंजिला** हवामहल का निर्माण **सवाई प्रतापसिंह** ने 1799 ई. में करवाया।
- 88 फीट ऊँचे इस महल में **953 खिड़कियाँ व 365 जाली झरोखे** हैं।
- **आकार -** श्रीकृष्ण के मुकुट के समान या पिरामिडनुमा।
- यह महल **राधा-कृष्ण** को समर्पित है।
- हवामहल का **वास्तुकार उस्ताद लालचन्द** है।
- **आनन्द पोल -** हवामहल का प्रवेश द्वार।
- इसका निर्माण **बलुआ पत्थर व चूने** से किया गया।
- **एडविन आर्नोल्ड** ने लिखा कि अलादीन का जिन भी इससे अधिक सुन्दर महल का सर्जन नहीं कर सकता।

पाँच मंजिला -

- 1. शरद या **प्रताप** मंदिर (सबसे निचली)
  2. रतन मंदिर
  3. विचित्र मंदिर
  4. प्रकाश मंदिर
  5. हवा मंदिर (सबसे ऊपरी)
- हवा महल को **वर्ष 1968 में संरक्षित स्मारक** घोषित किया गया।

आमेर महल

- **निर्माण -** आमेर की **मावठा झील** के पास की पहाड़ी पर कच्छवाहा नरेश **मानसिंह** द्वारा 1592 ई. में बनाया गया था।
- ये **हिन्दू-मुस्लिम** शैली के समन्वित रूप है।
- **मिर्जा राजा जयसिह** ने 1639 ई. में **गणेश पोल** का निर्माण करवाया। फर्ग्यूसन के अनुसार गणेश पोल दरवाजा स्थापत्य एवं चित्रकला के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- इस महल के मुख्य प्रवेश द्वार में प्रवेश करते ही राजपूत-मुगल शैली पर बना **'दीवान-ए-आम'** है जो चारों ओर से लाल पत्थरों के खम्भों की दोहरी पंक्तियों से युक्त बरामदो से घिरा हैं।
- इस विशाल द्वार को फर्ग्यूसन ने संसार का सर्वोत्कृष्ट प्रवेश द्वार बताया है।

जलमहल

- यह महल जयपुर-आमेर मार्ग पर मानसागर झील में स्थित है।
- **निर्माता -** सवाई जयसिंह-द्वितीय।
- यह पानी, प्रकृति और प्राचीनता का अनूठा संगम है।
- सवाई जयसिंह ने **अश्वमेघ यज्ञ** में आमंत्रित ब्राह्मणों के भोजन व विश्राम की व्यवस्था इसी महल में करायी थी।
- **सवाई प्रतापसिंह** ने इन महलों को आधुनिक रूप दिया।

सिसोदिया रानी का महल (जयपुर)

- **निर्माता -** सवाई जयसिंह (द्वितीय)।
- यह 1728 ई. में **'सिसोदिया रानी चन्द्रकुंवरी'** के लिए बनाया गया।
- इस महल की भीतरी दीवारों पर **म्यूरल पेंटिंग** में शिकार के दृश्य और राधा-कृष्ण के चित्र बने हुए हैं।
- इसी महल में सिसोदिया रानी ने **माधोसिंह प्रथम को जन्म** दिया।

सिटी पैलेस (जयपुर)

- **निर्माता -** सवाई जयसिंह-द्वितीय।
- **निर्देशनकर्ता -** विद्याधर भट्टाचार्य
- **अन्य नाम:** 'चन्द्रमहल', 'सतखणा महल', 'राजमहल', 'सबरता'।
- यह **जयपुर राजपरिवार का निवास स्थान** था।
- **7 मंजिलें -**
  1. चन्द्र मंदिर (सबसे निचली मंजिल)
  2. सुख निवास
  3. रंग मंदिर
  4. शोभा निवास
  5. छवि निवास
  6. श्रीनिवास
  7. मुकुट मंदिर।
- **सर्वतोभद्र महल -** सिटी पैलेस परिसर में स्थित इस महल को दीवाने खास भी कहा जाता है। इसी के पास तालकटोरा झील के किनारे बादल महल स्थित है।
- **गंगोज कलश या गंगाजलि** - चन्द्र महल के दीवाने-खास में रखे चाँदी के दो बड़े कलश।
- **उदयपोल -** सिटी पैलेस में प्रवेश के लिए बने **7** द्वारों में से एक द्वार, जिसका निर्माण **1900** में महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय ने करवाया था।
- **सिरह-ड्योढ़ी -** सिटी पैलेस का पूर्वी प्रवेश द्वार।
- इस महल में स्थित दीवान-ए-आम में महाराजा का निजी पुस्तकालय (पोथीखाना) एवं शास्त्रागार है।

रामबाग पैलेस

- **जयपुर** में राज्य के अतिविशिष्ट व सम्मानीय अतिथियों के ठहरने के लिए **सवाई रामसिंह द्वितीय** द्वारा रामबाग पैलेस का निर्माण कराया गया था।

बादल महल

- जयपुर में **सवाई जयसिंह-द्वितीय** ने बनवाया।

24 रानियों का महल

- यह महल आमेर (जयपुर) में स्थित है।

एक समान नौ महल

- यह महल जयपुर के **नाहरगढ़ दुर्ग** में स्थित हैं।
- इन नौ महलों का निर्माण **सवाई माधोसिंह द्वितीय** ने अपनी रानियों के लिए करवाया था।

शीशमहल

- आमेर महल के आकर्षण में से एक।
- **निर्माता -** मिर्जा राजा जयसिंह।
- **अन्य नाम -** 'दीवाने खास', 'जयमन्दिर'।

हवेलियाँ

- राजस्थान में हवेली स्थापत्य कला का विकास स्वतंत्र रूप से हुआ। हवेली निर्माण में मुख्य योगदान राजस्थान के सेठ-साहूकारों का रहा है।
- राजस्थान में **जैसलमेर** को **'हवेलियों का शहर'** तथा **बीकानेर** को **'हजार हवेलियों का शहर'** कहा जाता है।
- राजस्थान में मरुक्षेत्र की हवेलियाँ अपनी पत्थर की जाली व कटाई के कारण तथा पूर्वी राजस्थान व हाड़ौती की हवेलियाँ अपनी कलात्मक संगतरासी के लिए प्रसिद्ध है।
- हवेली स्थापत्य कला का विकास विशेषकर **17**वीं-**18**वीं सदी में हुआ।
- राजस्थान में हवेली के प्रमुख द्वार के अगल-बगल के कमरे, सामने चौबारा, चौबारे के अगल-बगल व पृष्ठ में कमरे होते थे।
- शेखावटी की हवेलियाँ **फ्रेस्को पेंटिंग** (**भित्ति चित्रण**) के लिए जानी जाती हैं।

जोधपुर की हवेलियाँ –

- **1. पुष्प हवेली –** इसका निर्माण महाराजा जसवंतसिंह द्वितीय के शिल्पी **रघुनाथमल जोशी/भुरजी जोशी** ने करवाया।
- यह विश्व की एकमात्र हवेली है, जिसका निर्माण एक ही नक्षत्र **पुष्य नक्षत्र में** किया गया।

  2. पास हवेली
  3. बड़े मियां की हवेली
  4. राखी हवेली

फलोदी की हवेलियाँ –

- 1. लालचन्द ढड्डा की हवेली
  2. सांगीदास थानवी की हवेली
  3. मोतीलाल अमरचंद की हवेली

जैसलमेर की हवेली –

- यहां की हवेलियों में पीले पत्थरों पर कमल, वृक्ष, गुलाब, कलश, ज्यामितिक आकारों जैसे गोलाकार, चौरस, अष्टकोण, पंचकोष, षटकोण तथा त्रिकोण की खुदाई काम हुआ है।
- जैसलमेर की हवेलियाँ पत्थर की **जाली व कटाई** के कारण प्रसिद्ध है।
- जैसलमेर को **'हवेलियों का नगर'** कहते हैं।

1. पटवों की हवेली

- यह हवेली **पाँच मंजिला** है।
- **निर्माण-** जैसलमेर नगर के बीचों-बीच में स्थित इस हवेली का निर्माण **सेठ गुमानचन्द पटवा** द्वारा **18**वीं सदी के उत्तरार्द्ध में करवाया गया था।
- इसकी पहली मंजिल की **आकृति जहाज** के जैसी है तथा दूसरी मंजिल आयताकार है और इसकी पाँचवीं मंजिल पर स्वतंत्र रथ आकार के जाली झरोखे है।
- इस हवेली में **हिन्दू, ईरानी**, **यहूदी व मुगल** स्थापत्य कला का सुन्दर समन्वय है।
- यह हवेली विश्व की एकमात्र हवेली है, जिसकी **खिड़कियाँ पत्थर की** बनी हुई हैं।

2. नथमलजी की हवेली

- जैसलमेर की इस हवेली का निर्माण **महारावल बैरीसाल** के समय हुआ है, जिसके शिल्पकार '**हाथी**' **एवं** '**लालू**' थे।
- इसका निर्माण **1881-85 ई.** के बीच करवाया गया था।
- यह हवेली पाँच मंजिला **पीले पत्थर** से निर्मित है।
- सबसे ऊपरी मंजिल पर रथाकार झरोखे हैं।

3. सालिमसिंह की हवेली

- जैसलमेर राज्य के प्रधानमंत्री **सालिमसिंह मेहता** ने 1815 ई. में इस हवेली का निर्माण करवाया था।
- इस हवेली में सात खण्ड पत्थर के और ऊपर दो खण्ड लकड़ी के बने हैं। वर्तमान में इसके ऊपर से दो लकड़ी के बने खण्ड उतार दिए गए हैं। लकड़ी के ऊपर बनाए गए इस खण्ड को **शीशमहल व रंगमहल** कहते हैं।
- इसकी पाँचवीं मंजिल को **मोतीमहल या जहाज महल** कहते है। इसके ऊपर लकड़ी की दो मंजिलें और भी बनाई गयी थी, जो क्रमश**: शीशमहल और रंगमहल** कहलाती थी लेकिन राजकीय कोप के कारण तुड़वा दिया गया था।
- इस हवेली को **9 खण्डों वाली हवेली** भी कहते हैं।

जयपुर की हवेलियाँ –

- 1. चुरसिंह की हवेली
  2. पुरोहितजी की हवेली
  3. रत्नाकर भट्ट पुण्डरिका की हवेली
  4. ख्वासजी की हवेली
  5. नानाजी की हवेली
  6. नाटाणियों की हवेली
  7. धाबाईजी की दीवान साहब की हवेली।

उदयपुर की हवेलियाँ –

1. बागौर की हवेली

- उदयपुर में **पिछोला झील** के निकट बागौर की हवेली का निर्माण ठाकुर **अमरचंद बड़वा** ने करवाया।
- इस हवेली में 138 कमरे बने हुए हैं।
- 1986 में यहाँ पर **पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र** को स्थापित किया गया है।

– इसी हवेली में **विश्व की सबसे बड़ी पगड़ी** रखी हुई है।

2. बाफना की हवेली

3. पिपलिया की हवेली

3. मोहनसिंह जी की हवेली

बीकानेर की हवेलियाँ –

1. रामपुरिया की हवेलियाँ

– ये हवेलियाँ **रामपुरिया मोहल्लों** की एक गली में क्रमबद्ध रूप से निर्मित हैं।

– यह हवेलियाँ अपने **विशाल आँगन और स्थापत्य कला** के कारण विश्व विख्यात हैं।

2. बच्छावतों की हवेली

– **बीकानेर की सबसे पुरानी हवेली** जो लाल पत्थर से निर्मित।

– इस हवेली का निर्माण 1593 ई. में **कर्णसिंह बच्छावत** ने करवाया था।

3. पूनमचंद जी कोठारी की हवेली

– यह हवेली **तितलीनुमा** है।

– इस हवेली में सारा **पत्थर दुलमेरा** का है।

– इस हवेली के निर्माता **भूधर जी चलवा** थे।

4. रिखजी बागड़ी की हवेली - 3 मंजिला

5. लक्ष्मीनारायण डागा की हवेली

– इसे **'गोल्डन किंग'** की हवेली के रूप में जाना जाता है।

6. भैंरोदान जी कोठारी की हवेली

– शाहजहाँ कालीन मुगल इमारतों की याद को ताजा कर देती है।

बीकानेर की अन्य हवेलियाँ-

– मोहता, मूंदड़ा, गुलेच्छा, बागड़ी, रिखजी, कोठारी, सेठिया, बांठिया, ओसवाल एवं माहेश्वरी की हवेलियाँ तथा सेठ चाँदमल ढड्ढा की हवेली बीकानेर की महत्त्वपूर्ण हवेलियाँ हैं।

- वर्ष 2012 में बीकानेर की हवेलियों को '**वर्ल्ड मोन्यूमेंट वॉच**' कार्यक्रम में शामिल किया गया था।

शेखावटी की हवेलियाँ

– शेखावटी की हवेलियों के भित्ति चित्रण में पौराणिक, ऐतिहासिक विविध विषयों का चयन, स्वर्ण व प्राकृतिक रंगों का प्रयोग तथा फ्रेस्को बुनो, फ्रेस्को सेको व फ्रेस्को सिम्पल विधियों का प्रयोग किया गया है।

1. ईसरदास मोदी की हवेली

– झुंझुनूं की ईसरदास मोदी की हवेली **'शताधिक खिड़कियों'** के लिए विश्वविख्यात है।

बिसाऊ (झुंझुनूं) की हवेलियाँ

– (i) नाथूराम पोद्दार की हवेली

(ii) सेठ जयदयाल केड़िया की हवेली

(iii) सीताराम सिंगतिया की हवेली

(iv) सेठ हीरालाल - बनारसीलाल की हवेली।

मण्डावा (झुंझुनूं) की हवेलियाँ -

– (i) सागरमल लाडिया की हवेली

(ii) रामदेव चौखाणी की हवेली

(iii) मण्डावा की हवेली

महनसर :-

(i) सोने-चाँदी की हवेली।

मण्डावा :-

(i) सागरमल लाडिया की हवेली

(ii) रामदेव चौखाणी की हवेली

(iii) मण्डावा की हवेली

पिलानी (झुंझुनूँ)

बिरला हवेली।

डूंडलोद (झुंझुनूँ) :-

(i) सेठ लालचन्द गोयनका की हवेली।

मुकुन्दगढ़ (झुंझुनूँ) :-

(i) सेठ राधाकृष्ण की हवेली।

(ii) केसरदेव कानोड़िया की हवेली।

चिड़ावा की हवेलियाँ

– (i) बागड़ियों की हवेली

(ii) डालमिया की हवेली

चूरू की हवेलियाँ

– 1. मालजी का कमरा - मालचंद कोठारी द्वारा निर्मित।

2. रामनिवास गोयनका की हवेली

3. मंत्रियों की हवेली

4. सुराणों की हवेली - चूरू की इस हवेली में 1100 से ज्यादा दरवाजे एवं खिड़कियाँ हैं।

दानचंद चोपड़ा की हवेली - सुजानगढ़ में स्थित है।

लक्ष्मणगढ़ (सीकर) की हवेलियाँ

– (i) केड़िया की हवेली

(ii) राठी की हवेली

(iii) रोनेड़ी वालों के चौक की हवेली

(iv) जिजोड़िया हवेली

रामगढ़ की हवेलियाँ

– (i) बैजनाथ रुइयाँ की हवेली

(ii) ताराचन्द रुइयाँ की हवेली

(iii) खेमका सेठों की हवेलियाँ

मंदिर

मंदिरों की प्रमुख शैलियाँ-

1. **नागर शैली -** उत्तर भारत
2. **बेसर शैली -** मध्य भारत
3. **द्रविड़ शैली** - दक्षिण भारत

1. नागर शैली

- यह शैली उत्तर भारत में स्थित मंदिरों में पाई जाती है। इस शैली में मंदिर **उच्चे चबूतरे** पर स्थित होते है। मंदिर के गर्भगृह में एक प्रमुख मूर्ति होती है और उस मूर्ति के चारों ओर परिक्रमा चक्र होता है।

2. बेसर शैली

- नागर शैली और द्रविड़ शैली का मिश्रण रूप बेसर शैली कहलाता है।

3. द्रविड़ शैली

- यह शैली मुख्यतः **दक्षिण भारत** में होती है। इस शैली में मंदिर कई मंजिलों में बना होता है। इस मंदिर के अंदर कई छोटे-छोटे मंदिर बने होते हैं। इसमें कई कक्ष बने होते हैं, जलकुंड बने होते हैं। ऊपर का भाग पिरामिडानुकार होता है। मंदिर के नीचे का आधार वर्गाकार, मध्य का भाग गुंबदाकार, प्रवेश द्वार विशाल होता है, इसे गोपुरम कहते हैं।

राजस्थान के प्रमुख मंदिर

शीतलेश्वर महादेव मंदिर (झालावाड़)

- शीतलेश्वर महादेव का मंदिर राजस्थान में **झालरापाटन (झालावाड़)** जिले में स्थित है।
- यह राजस्थान का पहला **तिथि अंकित मंदिर** है। यहां से प्राप्त शिलालेख के अनुसार यह मंदिर **689 ईस्वी** में बना हुआ है। इस पर राजा का नाम मिट गया है।
- इसे **चन्द्रमोलेश्वर मन्दिर** भी कहा जाता है।

सहस्रबाहु मंदिर (सास-बहु का मंदिर, उदयपुर)

- सहस्रबाहु का मंदिर **उदयपुर के नागदा** में स्थित है। इस मंदिर को सास-बहू का मंदिर है। यह भगवान **विष्णु का मंदिर** है।
- इसका निर्माण हिंदू शैली पर आधारित है।
- इस मंदिर का निर्माण 1026 ई. में **गुहिल शासक श्रीधर** ने करवाया था।
- यहाँ दो मन्दिर बनाए गए है, जिसमें बड़ा मन्दिर **'सास का मन्दिर'** कहलाता है, जिसमें 10 देव प्रतिमाएँ विराजमान है तथा छोटा मन्दिर **'बहु का मन्दिर'** कहलाता है, इसे पंचायतन शैली में बनाया गया है।

जगदीश मन्दिर (उदयपुर)

- **निर्माण -** महाराणा जगतसिंह प्रथम ने 1651 ई. में करवाया था।
- **पंचायतन शैली** में बने इस मन्दिर में **भगवान विष्णु** की काले पत्थर की प्रतिमा है।
- इस मन्दिर के चारों कोनों में शिव-पार्वती, गणपति, सूर्य एवं बाण माता की मूर्तियाँ स्थापित हैं।
- गर्भगृह के सामने भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ की विशाल प्रतिमा है।

अम्बिका माता मन्दिर

- जगत (उदयपुर) में 961 ई. में।
- **उपनाम - 'मेवाड़ का खजुराहो'।**
- इस मन्दिर के **शिखर में 25 अंग-उपांग** हैं।

एकलिंग जी का मंदिर (उदयपुर)

- एकलिंग का मंदिर उदयपुर में **कैलाशपुरी में** स्थित है। मेवाड़ के महाराणा एकलिंग जी को अपना राजा मानते थे और खुद को उनका दीवान समझते थे।
- इस मंदिर का निर्माण **बप्पा रावल** ने 8 वीं शताब्दी में करवाया था। इसे **लकुलिश संप्रदाय का मंदिर** भी कहते हैं। यह राजस्थान में स्थित लकुलीश संप्रदाय का एकमात्र मंदिर है।
- यह राजस्थान में भगवान शिव का सबसे बड़ा मंदिर है। इस मंदिर में **चतुर्मुखी शिवलिंग** की पूजा होती है। यहां पर फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी पर महाशिवरात्रि का मेला लगता है।
- यहाँ पर **हारित ऋषि की मूर्ति** भी स्थित है।

बाड़ोली के शिव मंदिर (चित्तौड़गढ़)

- बाड़ोली के शिव मंदिर चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है। इसका निर्माण हूण शासक **मिहिरकुल** ने छठी शताब्दी में करवाया था।
- यह मंदिर **पंचायतन शैली** पर आधारित है।

कंसुआ के शिव मंदिर (कोटा)

- कंसुआ के शिव मंदिर कोटा जिले में स्थित है। इस मंदिर के पास में ही एक आठवीं शताब्दी का कुटिल लिपि में लिखा हुआ शिलालेख है। यह शिलालेख **शिवगण मौर्य** का है।
- मंदिर के गर्भगृह में **काले पत्थर का चतुर्मुख शिवलिंग** है। इस मंदिर की खास विशेषता है कि सूर्य की पहली किरण मंदिर में स्थित शिवलिंग पर पड़ती है। यहां पर स्थित **भैरव मंदिर** की आदमकद मूर्ति स्थित है।

चारचौमा शिवालय (कोटा)

- चारचौमा शिवालय कोटा में **गुप्तकालीन** समय का प्राचीन शिवालय है। कोटा राज्य के इतिहासकार डॉ. मथुरालाल शर्मा के अनुसार यह शिव मंदिर कोटा राज्य का सबसे पुराना देवालय है। मंदिर में **चतुर्मुखी शिवालय** है।

विभीषण मंदिर (कोटा)

- कोटा जिले के कैथून में यह मंदिर तीसरी से पाँचवीं शताब्दी के मध्य का है। यहां स्थित मूर्ति धड़ के ऊपर तक की है, जिसे विभीषण की मूर्ति माना जाता है। कुछ इतिहासकार इसे हनुमान जी मूर्ति मानते हैं।

श्रीनाथ मंदिर (नाथद्वारा)

- श्रीनाथ जी मंदिर राजसमंद के **नाथद्वारा** में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 1671-72 ई. में मेवाड़ के **महाराणा राजसिंह** ने करवाया था।
- यह मंदिर वल्लभ सप्रदाय का सबसे बड़ा मंदिर है।
- श्रीनाथ जी की मूर्ति मूल रूप से मथुरा में एक मंदिर में **वल्लभाचार्य** ने स्थापित की थी। 1669 ई. में औरंगजेब द्वारा मंदिरों को ध्वस्त करने पर तब वहां के पंडितों ने इसे नाथद्वारा लाकर स्थापित किया।
- **अन्नकूट महोत्सव (कार्तिक शुक्ल एकम)** – इस दिन **'भीलों की लूट'** प्रसिद्ध है।
- हवेली स्थापत्य शैली में बनाए गए, इस मन्दिर में **'भगवान कृष्ण के बाल रूप'** (वल्लभ सम्प्रदाय) की पूजा की जाती है। यह मन्दिर **'हवेली संगीत'** एवं **'पिछवाई कला'** के लिए प्रसिद्ध है।
- इस मंदिर के अलावा कोटा का मथुराधीश, जयपुर का गोविंददेव जी का मंदिर भी मथुरा से लाई गई मूर्तियों से निर्मित है।

रंगनाथ का मंदिर (पुष्कर)

- रंगनाथ का मंदिर **पुष्कर** में स्थित है। इस मंदिर में भगवान विष्णु, लक्ष्मी तथा नृसिंह जी की 1300 साल से भी पुरानी मूर्तियाँ है। इसमें स्थित काले पत्थरों से निर्मित रंगनाथ की मूर्ति स्थित है।
- यह मंदिर वास्तुकला का अद्भुत नमूना है।

ब्रह्माजी के प्रमुख मंदिर

(i) पुष्कर (अजमेर)

- यह ब्रह्माजी का सम्पूर्ण भारत में एकमात्र मंदिर है, जहाँ ब्रह्माजी की विधिवत रूप से पूजा होती है।
- इस मंदिर के मूल निर्माणकर्ता के बारे में जानकारी नहीं है। लेकिन वर्तमानस्वरूप **'गोकुल चन्द्र पारिक'** ने दिया।
- इस मंदिर में **नवग्रहों, सप्तऋषि, नारद के मंदिर** स्थित हैं।

(ii) आसोतरा (बाड़मेर)

- निर्माण – खेताराम जी महाराज।

(iii) छिछ गाँव (बाँसवाडा)

- आम्बलिया तालाब के किनारे।

छींछ का ब्रह्मा मंदिर (बांसवाड़ा)

- बांसवाड़ा के छींछ ग्राम में बना यह बारहवीं शताब्दी का **ब्रह्माजी का प्राचीन मंदिर** है।
- इस मंदिर की स्थापना सिसोदिया वंश के **महारावल जगमाल** ने की थी। मंदिर में ब्रह्माजी की छह फीट विशाल चतुर्मुखी मूर्ति स्थित है।
- मंदिर के बाहर 6 संगमरमर पत्थरों पर **नवग्रहों की मूर्तियाँ** स्थित है। मंदिर के पास एक तालाब है जिस पर एक घाट स्थित है जिसे ब्रह्मा जी का घाट कहते हैं।

वराह मंदिर (पुष्कर)

- वराह मंदिर पुष्कर में स्थित है। यह मंदिर **भगवान विष्णु** के वराह अवतार से संबधित है।
- इस मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में **चौहान राजा अर्णोराज** ने 1133-50 ईस्वी में करवाया था।

सावित्री मंदिर या सरस्वती मंदिर

- स्थान -रत्नगिरी पहाड़ी (पुष्कर)
- इस मंदिर में **दो प्रतिमाएँ** हैं-
  1. सावित्री माता
  2. माँ सरस्वती
- यह राज्य का एकमात्र सरस्वती मंदिर है।

नारायणी माता का मंदिर (अलवर)

- नारायणी माता का मंदिर अलवर जिले की **राजगढ़ तहसील** में **बरवा डूंगरी** पर स्थित है।
- नारायणी माता को नाइयों की कुल देवी के रूप में पूजा जाता है।
- **मीणा जाति** के लोग भी इन्हें अपनी **इष्ट देवी** मानते हैं।

त्रिपुरा सुंदरी का मंदिर (बांसवाड़ा)

- त्रिपुरा सुंदरी का मंदिर बांसवाड़ा के **अमराई गाँव,** तलवाड़ा में **त्रिपुरा पहाड़ी** पर स्थित है। इस मंदिर में सिंह पर सवार भगवती की अष्टादश भुजा की मूर्ति है। इसे लोग त्रिपुर सुंदरी, तुरताई माता, त्रिपुरा महालक्ष्मी आदि नामों से संबोधित करते हैं।
- इस मंदिर में भगवती की मूर्ति के पैरों के नीचे प्राचीन समय का कोई यंत्र उत्कीर्ण है।

कलिंजरा के जैन मंदिर (बांसवाड़ा)

- बांसवाड़ा जिले **कलींजरा गाँव** में जैन मंदिर प्रसिद्ध है। यह मंदिर दिगंबर जैनियों का है और **ऋषभदेव** के नाम से विख्यात है।
- मंदिर में **पार्श्वनाथ जी की खड़ी मूर्ति** है, जिसके आसन पर विक्रमी संवत् 1578 अंकित है।

बेणेश्वर धाम (डूँगरपुर)

- **अवस्थिति -** डूँगरपुर जिले के नवाटपुरा गाँव में सोम, माही और जाखम नदियों के संगम पर ।
  उपनाम- वागड़ का पुष्कर और वागड़ का कुम्भ।
- इस मंदिर में वागड़ क्षेत्र का सर्वाधिक पूज्य माने जाना वाला 5 फीट ऊँचा **खण्डित शिवलिंग** स्थापित है। यह स्वयंभू शिवलिंग शीर्ष से पाँच हिस्सों में बंटा हुआ है।
- **मेला -** माघ शुक्ल एकादशी से माघ शुक्ल पूर्णिमा तक।

लोक देवता

– अलौकिक चमत्कारों से युक्त एवं वीरतापूर्ण कार्य करने वाले महापुरुष राजस्थान के जनमानस में लोकदेवता के रूप में जाने गए। इन्होंने अपने असाधारण कार्य तथा अपने आत्मबल द्वारा समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना, हिन्दू धर्म की रक्षा एवं जनता के हित में अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया।

मारवाड़ के पंच पीर -

– 1. पाबूजी 2. हड़बूजी
3. रामदेव जी 4. मेहा जी
5. गोगाजी

"पाबू, हड़बू, रामदेव, मांगलिया मेहा
पाँचों पीर पधार, जो गोगा जी जेहा।।"

पाबूजी राठौड़

– **जन्म -** 1239 ई. में कोलुमण्ड गाँव (फलोदी) में।
– **मुहणौत नैणसी के अनुसार इनका जन्म खारिया खाबड जूना, बाडमेर में हुआ।**
– **पिता -** धाँधल जी राठौड़।
– **माता -** कमलादे।
– **पत्नी -** फूलमदे या सुप्यार दे सोढ़ा।
– **उपनाम -** ऊँटों के देवता, गौरक्षक देवता व प्लेग रक्षक देवता, **भाला रा देवता, लक्ष्मण का अवतार, हाडफाड का देवता**।
– **प्रतीक चिह्न -** भाला लिए हुए अश्वारोही तथा बायीं ओर झुकी हुई पाग।
– **अवतार -** लक्ष्मण का
– **पाबू प्रकाश -** पाबूजी की जीवनी है, जिसके रचयिता आशिया मोडजी थे।
– **पाबूजी के पवाड़े या पावड़े -** प्रसिद्ध गाथा गीत है, जो माठ वाद्य यंत्र के साथ गाए जाते हैं।
– **पाबूजी की फड़ -** नायक या थोरी जाति के भोपों द्वारा रावण हत्था वाद्ययंत्र के साथ बाँची जाती है।
– **मेला -** कोलुमण्ड गाँव (फलोदी) में मेला भरता है।
– **पाबूजी की घोड़ी -** केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी।)
– **पाबू धणी री वाचना** - थोरी जाति लोग सारंगी के साथ पाबूजी का यश गाते है जिसे राजस्थान की प्रचलित भाषा में पाबू धणी री वाचना कहते हैं।
– हरमल व चाँदा डेमा पाबूजी के रक्षक थे।
– सन् 1276 ई. में जोधपुर के देचू गाँव में देवल चारणी की गायों को अपने बहनोई जींदराव खींची से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए।
– इस युद्ध में पाबूजी के भाई बूड़ोजी भी शहीद हुए।
– पाबूजी के भतीजे व बूड़ोजी के पुत्र रूपनाथजी ने जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की मृत्यु का बदला लिया।
– मारवाड़ में साण्डे (ऊँटनी) लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
– ऊँटों की पालक जाति राईका या रेबारी या देवासी के आराध्य देव पाबूजी हैं।
– **बाकीदास जी ने पाबूजी रा गीत की रचना की।**

हड़बूजी

– **जन्म -** भुंडेल (नागौर)
– **पिता -** मेहाजी साँखला
– **मौसेरे भाई -** बाबा रामदेवजी
– गुरु - बालीनाथ
– सवारी - सियार
– ज्ञाता - शकुन शास्त्र
– प्रमुख पूजा स्थल - बेंगटी गाँव (फलोदी)
– पूजारी - साँखला राजपूत
– यहाँ हड़बूजी की गाड़ी (छकड़ा या ऊँट गाड़ी) की पूजा होती है। इस गाड़ी में हड़बूजी विकलांग गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
– संकटकाल में हड़बूजी ने जोधपुर के राजा राव जोधा को तलवार भेंट की और राव जोधा ने इन्हें बेंगटी (फलोदी) की जागीर प्रदान की।

रामदेवजी

– **जन्म -** भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को उंडूकाश्मीर/उंडूकासमेर गाँव (शिव-तहसील, बाड़मेर) में।
– **उपनाम -** रामसा पीर, रूणेचा रा धणी, पीरां रा पीर, रूणेचा रा श्याम।
– **अवतार -** श्रीकृष्ण का
– **अर्जुन के वंशज कहलाते है।**
– **पिता का नाम -** अजमलजी तंवर
– **माता -** मैणादे
– **पत्नी -** नेतलदे
– **सगी बहनें -** लाछा बाई, सुगना बाई
– **मुँह बोली बहन -** डाली बाई
– **गुरु -** बालीनाथ (बालीनाथजी का मन्दिर - मसूरिया, जोधपुर में)
– **शिष्य -** हरजी भाटी
– **शिष्या –** आई माता
– **सवारी -** लीला (हरा) घोड़ा।
– **प्रतीक चिह्न -** पगल्यां
– **समाधि -** रूणेचा (जैसलमेर) में रामसरोवर की पाल पर भाद्रपद शुक्ल दशमी को ली।

- रामदेवजी के लिए नियत समाधि स्थल पर उनकी मुँह बोली बहन डाली बाई ने उनसे पहले समाधि ली।
- **प्रमुख पूजा स्थल** - रामदेवरा (रूणेचा, जैसलमेर)
- **अन्य पूजा स्थल** - मसूरिया (जोधपुर), बिराठिया (पाली), बिठूजा (बालोतरा), सूरताखेड़ा (चित्तौड़गढ़), छोटा रामदेवरा (जूनागढ़, गुजरात)।
- इस मंदिर का निर्माण बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने करवाया था।
- **मेला -** प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से दशमी तक।
- पश्चिमी राजस्थान का यह सबसे बड़ा मेला साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए प्रसिद्ध है।
- **नेजा -** रामदेवजी की पचरंगी व सफेद ध्वजा।
- **रिखियां -** रामदेवजी के मेघवाल भक्त।
- **ब्यावले -** भक्तों द्वारा गाये जाने वाले भजन।
- **जम्मा -** रामदेवजी के नाम पर भाद्रपद शुक्ल द्वितीया व एकादशी को रात्री जागरण दिलाया जाता है, उसे जम्मा कहते हैं।
- **परचा -** रामदेवजी के चमत्कारों को परचा कहते हैं।
- **आंण -** रामेदवजी के अनुयायी रामदेवजी की सौगंध को आंण कहते हैं।
- **पूजारी -** तँवर राजपूत
- **तेहरताली नृत्य -** रामदेवजी के मेले में कामड़िया जाति की महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- **फड़ -** रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावणहत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- **कामड़िया पंथ -** राजस्थान में कामड़िया पंथ के प्रमुख केन्द्र पादरला गाँव (पाली), पोकरण (जैसलमेर) व डीडवाना आदि हैं।
- **प्रसिद्ध रचना -** चौबीस बाणियाँ।

मेहाजी

- **जन्म -** कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी)
- **सवारी -** किरड़ काबरा घोड़ा।
- जैसलमेर के राव राणंगदेव भाटी से युद्ध करते हुए शहीद।
- **पूजा स्थल -** बापणी गाँव
- **मेला -** कृष्ण जन्माष्टमी (भाद्रपद कृष्ण अष्टमी) को।

गोगाजी चौहान

- **जन्म -** वि. सं. 1003 को ददरेवा (चूरू) में।
- **पिता -** जेवरजी चौहान
- **माता -** बाछल दे
- **पत्नी -** केलमदे (मेनलदे)
- **सवारी -** नीली घोड़ी।
- **उपनाम – सर्पों के देवता, जाहर पीर, चंडकोशिया का अवतार।**
- **सांकल नृत्य -** गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु नृत्य करते हैं। इस नृत्य में भक्त लोहे की साँकलों के गुच्छे अपनी पीठ पर उठा-उठाकर मारते हैं, जिसे छाया चढ़ाना कहते हैं।
- **गोगा राखड़ी -** किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- गोगाजी का अपने मौसेरे भाइयों अर्जन और सुर्जन के साथ जमीन-जायदाद को लेकर विवाद था। अर्जन और सुर्जन ने मुस्लिम आक्रांता महमूद गजनवी की सहायता से गोगाजी पर आक्रमण किया। गोगाजी ने वीरतापूर्वक संघर्ष करते हुए शहादत प्राप्त की।
- युद्ध के दौरान गोगाजी को सिरविहीन देख महमूद गजनवी ने उन्हें "जाहिर पीर" (साक्षात पीर) कहा।
- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा, जिस कारण इस स्थान को "शीर्षमेडी" या "शीषमेडी" कहा जाता है।
- उनका धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा, जिसके कारण इस स्थान को "धड़मेड़ी," "धुरमेड़ी," या "गोगामेड़ी" के नाम से जाना जाता है।

मुख्य मंदिर

1. धुरमेड़ी या गोगामेड़ी (नोहर, हनुमानगढ़)

- युद्ध करते समय गोगाजी का धड़ यहाँ गिरा, इसलिए इसे धड़मेड़ी/धुरमेड़ी या गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- निर्माण - फिरोजशाह तुगलक ने
- गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर 'बिस्मिल्लाह' लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है।
- वर्तमान स्वरूप - बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है।

2. शीर्षमेड़ी (ददरेवा)

- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा में गिरा इसलिए इसे शीर्षमेडी (शीषमेडी) कहते हैं।
- गोगाजी की ओल्डी - खिलेरियों की ढाणी, सांचौर
- मेला - प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में ।

तेजाजी

- जन्म - 1073 ई., माघ शुक्ला चतुदर्शी को खरनाल में नागवंशीय जाट में हुआ।
- उपनाम - काला और बाला के देवता, कृषि कार्य़ों के उपकारक देवता, गौरक्षक देवता, **शिवजी का अवतार, नागों का देवता**।
- पिता - ताहड़जी जाट
- माता - राजकुंवरी या रामकुँवरी
- पत्नी - पेमलदे
- सवारी - लीलण घोड़ी **/ सिणगारी**
- तेजा गीत - किसान खेतों में हल जोतते समय तेजाजी के गीत गाते हैं।
- तेजाजी ने लाछा गुर्जरी की गायों को मेर (वर्तमान आमेर) के मीणाओं से छुड़ाई।

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर

कठिन परीक्षाएँ भी आसान लगेंगी जब तैयारी होगी लक्ष्य के साथ।

सभी पुस्तके आपके नजदीकी बुक स्टोर पर उपलब्ध।

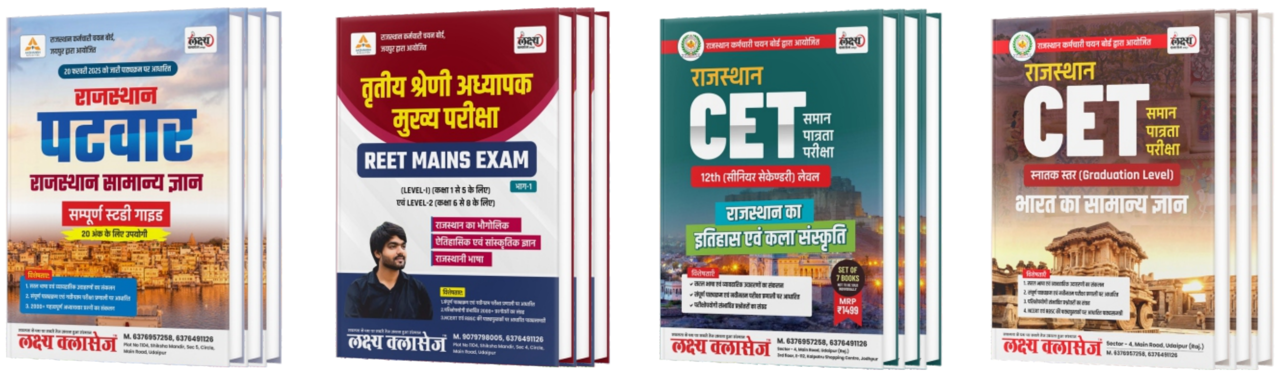

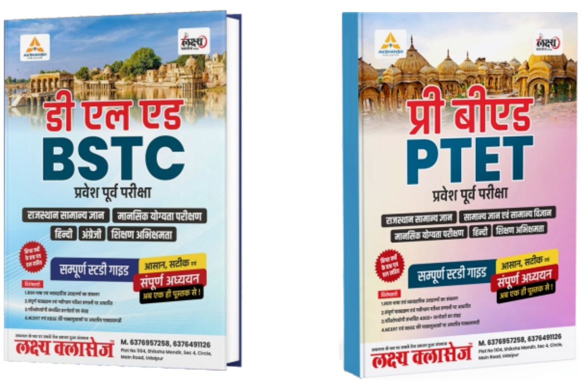

लक्ष्य क्लासेज की प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकों को खरीदने के लिए QR कोड स्कैन करें।

Scan to Download Lakshya App Now

ANDROID APP ON Google play

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान

लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur